आरती श्री तुलसी जी की

जय जय तुलसी माता
सब जग की सुख दाता वर दाता ।
सब योगों के ऊपर सब रोगों के ऊपर,
रूज से रक्षा करके भव त्राता ।
बटु पुत्री हे श्यामा सुर बल्ली हे ग्राम्या,
विष्णुप्रिये जो तुमको सेवे सो तर जाता ।
हरि के शीश विराजत त्रिभुवन से हो वंदित,
पतित जनों की तारिणी विख्याता ।
लेकर जन्मविजन में आई दिव्य भवन में,
मानव लोक तुम ही से सुख सम्पत्ति पाता ।
हरि को तुम अति प्यारी श्यामवर्ण कुमारी,
प्रेम अजब है उनका तुमसे कैसा नाता ।

विवरण

जो सभी योग के ऊपर हैं तथा सभी रोगों से रहित हैं, जो अपने आर्शीवाद से सबके मन को प्रसन्न करती हैं, ऐसी तुलसी माता की जय हो । जो सभी प्रकार के कष्टों का निवारण करके इस जग को सुखी बनाती हैं, ऐसी बटु पुत्री जी का रंग साँवला है तथा ये दवताओं के (डंडे के समान) सहारा हैं ।

आप विष्णु भगवान की बड़ी ही प्रिय हो, जो भी आपकी सेवा करता है, उसका उद्धार हो जाता है । दुःखी जनों के कष्टों का निवारण करने से आपका नाम पूरे संसार में फैला हुआ है । आप शून्य (बीज) के स्म में जन्म लेकर इस जग में आईं । आपका स्म - रंग साँवला है तथा भगवान की आप परम स्नेही हैं ।
आपका प्रभु से स्नेह एवं नाता अद्‌भुत है ।

visit www.astrogyan.com for more aarthi's, free indian astrology horoscope charts & predictions.
all information © since 2000, Aks Infotech Pvt. Ltd., portal designed & developed by Pintograph Pvt. Ltd.